

# BRAHMA JNANAVALLI MALA



**VERSE 2 TO 21**

VERSE 2

असङ्गोऽहमसङ्गोऽहमसङ्गोऽहं पुनः पुनः ।  
सच्चिदानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ २ ॥

asango'ham asango'ham asango'ham punah punah  
saccidanandarupo'ham ahamevaham avyayah ॥ 2 ॥

VERSE 3

नित्यशुद्धविमुक्तोऽहं निराकारोऽहमव्ययः ।  
भूमानन्दस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ ३ ॥

nityasuddhavamukto'ham nirakaro'ham avyayah  
bhumanandasvarupo'ham ahamevaham avyayah ॥ 3 ॥

VERSE 4

नित्योऽहं निरवद्योऽहं निराकारोऽहमच्युतः ।  
परमानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ ४ ॥

**nityo'ham niravadyo'ham nirakaro'ham acyutah ।  
paramanandarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 4 ॥**

VERSE 5

शुद्धचैतन्यरूपोहमात्मारामोऽहमेव च ।  
अखण्डानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ ५ ॥

**suddhacaitanyarupo'ham atmaramo'ham eva ca  
akhandanandarupo'ham ahamevahamavyaya ॥ 5 ॥**

VERSE 6

प्रत्यक्चैतन्यरूपोऽहं शान्तोऽहं प्रकृतेः परः ।  
शाश्वतानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ ६ ॥

**pratyakcaitanyarupo'ham santo'ham prakrteh parah ।  
sasvatanandarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 6 ॥**

VERSE 7

तत्त्वातीतः परात्माऽहं मध्यातीतः परः शिवः ।  
मायातीतः परंज्योतिरहमेवाहमव्ययः ॥ ७ ॥

**tattvatitah paratmaham madhyatitah parah sivah ।  
mayatitah paramjyotih ahamevahamavyayah ॥ 7 ॥**

VERSE 8

नानारूपव्यतीतोऽहं चिदाकारोऽहमच्युतः ।  
सुखरूपस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ ८ ॥

**nanarupavyatito'ham cidakaro'ham acyutah ।  
sukharupasvarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 8 ॥**

VERSE 9

मायातत्कार्यदेहादि मम नास्त्येव सर्वदा ।  
स्वप्रकाशैकरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ ९ ॥

**mayatatkaryadehadi mama nastyeva sarvada ।  
svaprakasaikarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 9 ॥**

VERSE 10

गुणत्रयव्यतीतोऽहं ब्रह्मादीनां च साक्ष्यहम् ।  
अनन्तानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ १० ॥

**gunatrayavyatito'ham brahmadinam ca sakshyaham ।  
anantanandarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 10 ॥**

VERSE 11

अन्तर्यामिस्वरूपोऽहं कूटस्थः सर्वगोऽस्म्यहम् ।  
परमात्मस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ ११ ॥

**antaryamisvarupo'ham kutasthah sarvago'smyaham ।  
paramatmasvarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 11 ॥**

VERSE 12

निष्कलोऽहं निष्क्रियोऽहं सर्वात्माऽऽद्यः सनातनः ।  
अपरोक्षस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ १२ ॥

**nishkalo'ham nishkriyo'ham sarvatma adyah sanatanah ।  
aparokshasvarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 12 ॥**

VERSE 13

द्वन्द्वादिसाक्षिरूपोऽहमचलोऽहं सनातनः ।  
सर्वसाक्षिस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ १३ ॥

**dvandvadisakshirupo'ham acalo'ham sanatanah ।  
sarvasakshisvarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 13 ॥**

VERSE 14

प्रज्ञानघन एवाहं विज्ञानघन एव च ।  
अकर्ताहमभोक्ताहमहमेवाहमव्ययः ॥ १४ ॥

**prajnanaghana evaham vijnanaghana eva ca ।  
akartaham abhoktaham ahamevahamavyayah ॥ 14 ॥**

VERSE 15

निराधारस्वरूपोऽहं सर्वाधारोऽहमेव च ।  
आप्तकामस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ १५ ॥

**niradharasvarupo'ham sarvadaroham eva ca ।  
aptakamasvarupo'ham ahamevahamavyayah ॥ 15 ॥**

VERSE 16

तापत्रयविनिर्मुक्तो देहत्रयविलक्षणः ।

अवस्थात्रयसाक्ष्यस्मि चाहमेवाहमव्ययः ॥ १६ ॥

**tapatrayavinirmukto dehatrayavilakshanah I**

**avasthatrayasakshyasmi cahamevahamavyayah II 16 II**

VERSE 17

दृग्दृश्यौ द्वौ पदार्थौ स्तः परस्परविलक्षणौ ।

दृग् ब्रह्म दृश्यं मायेति सर्ववेदान्तडिण्डिमः ॥ १७ ॥

**drg drsyau dvau padarthau stah parasparavilakshanau I**

**drg brahma drsyam mayeti sarvavedantadindimah II 17 II**

VERSE 18

अहं साक्षीति यो विद्याद्विविच्यैवं पुनः पुनः ।  
स एव मुक्तः सो विद्वानिति वेदान्तडिण्डिमः ॥ १८ ॥

**aham sakshiti yo vidyat vivicyaivam punah punah ।  
sa eva muktaḥ so vidvan iti vedantadindimah ॥ 18 ॥**

VERSE 19

घटकुड्यादिकं सर्वं मृत्तिकामात्रमेव च ।  
तद्वद्ब्रह्म जगत् सर्वमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥ १९ ॥

**ghatakudyadikam sarvam mrttikamatram eva ca ।  
tadvad brahma jagat sarvam iti vedantadindimah ॥ 19 ॥**

VERSE 20

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ।  
अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥ २० ॥

**brahma satyam jaganmithya jivo brahmaiva naparah I  
anena vedyam sacchastram iti vedantadindimah II 20 II**

VERSE 21

अन्तर्ज्योतिर्बहिर्ज्योतिः प्रत्यग्ज्योतिः परात्परः ।  
ज्योतिर्ज्योतिः स्वयंज्योतिरात्मज्योतिः शिवोऽस्म्यहम् ॥ २१ ॥

**antarjyotirbahirjyotih pratyakjyotih paratparah I  
jyotirjyotih svayamjyotih atmajyotih sivo'smyaham II 21 II**